सन्दर्भ और शिक्षा

यशवेन्द्र सिंह रावत

यह लेख दो बच्चों की स्कूल के सन्दर्भ के साथ अन्तःक्रिया की केस स्टडी प्रस्तुत करता है। लेख बच्चों व उनके सीखने व सफल होने की सम्भावनाओं का उनकी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के आधार पर आकलन करने पर तीखे सवाल उठाता है। वह यह मुद्दा भी उकेरता है कि बच्चों पर नकारात्मक टिप्पणियों के प्रभाव के प्रति ढाँचे में संवेदनशीलता नहीं है।

लेखक प्राइवेट व सरकारी स्कूलों के सन्दर्भ में एक और सामान्य प्रचलित मान्यता पर प्रश्न उठाता है। प्रश्न यह है कि क्या बेहतर सुविधा ही बेहतर शिक्षा को सुनिश्चित कर देती है? सं.

किसी भी बच्चे का जन्म कहाँ हो कहाँ नहीं, इस बात को निर्धारित नहीं किया जा सकता क्योंकि यह नैसर्गिक प्रवृत्ति का हिस्सा होता है। परन्तु इस बात को स्वीकारने के बावजूद समाज द्वारा किसी बच्चे के जन्म को लेकर बहुत-सी बातें कही जाती हैं, जैसे– यह कहना कि किसी बच्चे का जन्म किसी ख़ास सन्दर्भ में बेकार ही हुआ या ऐसा उसके साथ क्यों हुआ कि उसने किसी ख़ास सन्दर्भ में जन्म लिया या वह वहाँ / उस सन्दर्भ में पैदा होता / होती, तो अच्छा / बुरा होता, आदि। हर व्यक्ति किसी ख़ास सन्दर्भ में जन्म लेता है, यह सन्दर्भ, उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि, उसके व उसके आसपास के समाज के साथ बुने हुए ताने बाने आदि से बनता है। किसी व्यक्ति के सन्दर्भ में शिक्षा का महत्त्व रहता है और किसी के सन्दर्भ में 'जितने हाथ उतनी कमाई' का सिद्धान्त और किसी के सन्दर्भ में ये दोनों या इनके अलावा किसी और बात का महत्त्व रहता है।

ऐसे ही कुछ सन्दर्भ होते हैं विद्यालयी शिक्षा पाने वाले बच्चों के और शिक्षा प्रदान करने वाले विद्यालयों के। इन सन्दर्भों के चलते कई तरह की सामाजिक मान्यताएँ बच्चों के सीखने-सिखाने और उनके भविष्य को लेकर बनती-बुनती दिखाई देती हैं। इन मान्यताओं का असर बच्चे के सीखने पर तो पड़ता ही है, परन्तु साथ ही वह इन मान्यताओं के चक्रव्यूह में फँसकर कुछ समय पश्चात इन्हें सत्य मानने लगता है और इसी सन्दर्भ से आसपास की घटनाओं को देखने बरतने लगता है। हम यहाँ कुछ बच्चों और कुछ विद्यालयों के सन्दर्भों को रखकर अपनी बात आगे बढ़ाएँगे। इन सन्दर्भों को संकीर्णता व सीमितता में न देखा जाए अपितु पूरे विचार की बुनावट के एक कारक के तौर पर देखा जाए।

मोनिका का सन्दर्भ

मोनिका एक ग्यारह वर्ष की लड़की है, वह अपने परिवार के साथ शहर में रहती है। उसके परिवार में तीन सदस्य– उसकी माँ, भाई और वह स्वयं– थे जो कि अभी हाल ही में बढ़कर चार हो गए क्योंकि उसके भाई ने शादी कर ली और अब उसकी भाभी भी परिवार का हिस्सा है। मोनिका का भाई मज़दूरी करता है और उसकी माँ एवं मोनिका चाय का ठेला लगाते हैं जिससे आसपास के ट्रक ड्राइवर और बिल्डिंग बनाने वाले चाय लेते हैं। मोनिका के परिवार के पास एक छोटा-सा कमरा और बग़ल में बहता हुआ

गन्दा नाला है, यह नाला वहाँ रह रहे सभी लोगों के लिए एक खुला शौचालय है। अभी तक मोनिका, उसकी माँ और भाई एक साथ ज़मीन पर पतली-सी चादर लगाकर सोते थे, परन्तु भाई की शादी के बाद माँ ने उसके भाई और भाभी को वह कमरा सोने के लिए दे दिया। अब मोनिका और उसकी माँ अपनी रात ठेले के बग़ल में ही सोकर बिताते हैं। जब कभी बारिश, आँधी आदि आती है तब वे दोनों आसपास की दुकानों की सीढ़ियों पर बैठकर या सोकर रात बिताते हैं। मोनिका के दैनिक जीवन में स्कूल जाना एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। वह लगभग दो किलोमीटर चलकर एक सरकारी विद्यालय में



हीरा धुर्वे

जाती है, वह कक्षा सात की छात्रा है। उसकी पढ़ाई की लगन वहाँ की शिक्षिकाओं द्वारा सराही जाती है, यहाँ तक कि एक शिक्षिका ने उसकी बारहवीं कक्षा तक की पढ़ाई के ख़र्चे की ज़िम्मेदारी भी ले ली है।

मोनिका को चाय बाँटना पसन्द नहीं है क्योंकि जिन्हें वह चाय बाँटती है वे उसे कई बार ग़लत तरीक़े से या तो देखते हैं, छूते हैं या ग़लत टोन में बोलते हैं। वह अपनी माँ से भी बोलती है तो उसकी माँ ठेले से ही चिल्लाकर भड़ास निकाल लेती है। पर काम तो करना ही है। कभी-कभी माँ इसी बात को लेकर मोनिका पर भी चिल्ला देती है या फिर दो-चार थप्पड़ भी जड़ देती है। वो कहती है, 'तेरे बदले एक लड़का होता तो ये सब सुनने को नहीं मिलता और काम में भी मदद ज़्यादा हो पाती। पता नहीं पिछले जन्मों में क्या करम किए थे जो ये सब झेलना पड़ रहा है।' मोनिका को विद्यालय में आना पसन्द है क्योंकि वहाँ पर उसे कुछ साथी मिलते हैं जिनके साथ वो बातें कर लेती है और खेल लेती है। साथ ही शिक्षिकाएँ भी उसे पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। मोनिका इस बात को लेकर बहुत ख़ुश रहती है कि उसे बहुत आगे तक पढ़ने को मिलेगा। परन्तु एक बात उसे काफ़ी खलती है वो है, शिक्षिकाओं द्वारा किसी भी बाहरी व्यक्ति / अफ़सर के आने पर या तो उनके सामने बुलाकर या फिर उनको कक्षा में लाकर उसे दिखाना और बताना कि, 'ये है मोनिका जिसके बारे में मैं बात कर रही थी। ग़रीब है, इसकी माँ ठेला लगाती है भाई की शादी हो गई तो इसे और इसकी माँ को ठेले के पास ही सोना पड़ता है। पर पढ़ाई में अच्छी है।' उसे लगता है कि जो शिक्षिका उसकी पढ़ाई का ख़र्चा वहन कर रही, है क्या वो दया के भाव के चलते ऐसा कर रही हैं या उन्हें वाक़ई उसपर गर्व है और वह चाहती हैं कि मोनिका आगे पढ़े और जीवन में कुछ बनकर दिखाए। इसलिए उसके चेहरे पर एक शिकन और सन्नाटा हमेशा बना रहता है।

जमाल का सन्दर्भ

जमाल अभी 8 साल का है व ग्रामीण परिवेश में रहता है। उसके परिवार में छह सदस्य हैं, दादा-दादी, मम्मी-पापा, दीदी और वह स्वयं। परिवार की आय ठीक-ठाक है मम्मी-पापा और दादा मिलकर परचून की दुकान चलाते हैं। एक चार कमरों वाला मकान है, मोटर साइकिल है। जमाल के लिए नए-नए खिलौने, कपड़े आते रहते हैं, यहाँ तक कि घर में सभी को खाने से पहले पूछा जाता है कि वो क्या खाएँगे। जमाल भी एक विद्यालय में कक्षा 4 में पढ़ता है। जमाल को भी पढ़ना बहुत पसन्द है। उसकी क्लास

के सभी लड़के उसके दोस्त हैं एक रोहित को छोड़कर। रोहित, जमाल से इसलिए बात नहीं करता, क्योंकि उसे लगता है कि जमाल के घर पर गाय / भैंस का मीट बनाया और खाया जाता है। जमाल ने बहुत बार दूसरे दोस्तों के ज़रिए रोहित को बताया कि ऐसा नहीं है, उसके घर पर मुर्ग़ी और बकरा ही बनता है जबकि जमाल केवल अण्डे पसन्द करता है। पर फिर भी कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा। जमाल के दोस्तों को कभी खेलने का मन करता है तो वे उससे कहकर टीचर को खेलने के लिए बोलते हैं। वे ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि विद्यालय में जमाल के टीचर उसे पसन्द करते हैं और ऐसा उन्हें इसलिए लगता है कि क्लास में लगभग सभी बच्चों को डाँट फटकार और यहाँ तक कि मार भी पड़ती है, परन्तु जमाल के साथ सभी टीचर प्यार से बात करते हैं।

जमाल के शिक्षक किसी भी अधिकारी या अन्य बाहरी व्यक्तियों से यह कहकर उसका परिचय करवाते हैं कि, ‘ये बच्चा बहुत अच्छा है पढ़ाई में। इसके माँ-बाप चाहें तो किसी अँग्रेज़ी मीडियम के प्राइवेट स्कूल में इसे पढ़ा सकते हैं, पर पता नहीं क्यों उन्होंने इसे यहाँ रखा है?’ ये सब देख सुन कर जमाल थोड़ा अजीब महसूस करता है और सोचता है कि शिक्षक ऐसा क्यों बोलते हैं? ऐसा क्या है जिसके कारण मुझे डाँट या मार नहीं पड़ती, जबकि मैं भी कभी-कभी ग़लतियाँ करता हूँ? क्या ये स्कूल मेरे लिए नहीं है? मेरे पिता ने मुझे इस स्कूल में क्यों डाला? यहाँ के बच्चों में, मुझमें और जो मेरे बग़ल के प्राइवेट स्कूल में बच्चे पढ़ते हैं, उनमें क्या फ़र्क़ है? इन्हीं प्रश्नों की उलझन में वह न तो अन्य बच्चों के साथ ज़्यादा खेल पाता है और न ही किसी से भी अपनी उलझन बता पाता है।

इस तरह सतीश, राखी, डेविड, मरियम आदि के भी अपने-अपने ग्रामीण व शहरी विद्यालयों से सम्बन्धित सन्दर्भ व प्रश्न हैं जिनसे वे रोज़ाना जूझते हैं।



चित्र : हीरा धुर्वे

क्या सन्दर्भ और शिक्षा के बीच कोई सम्बन्ध होता है? यानी, ‘सन्दर्भ बेहतर (आधारभूत सुविधा प्राप्त) होने से किसी बच्चे में बेहतर शिक्षा पाने की दक्षता ज़्यादा होती है’, ऐसा कोई दावा किया जा सकता है? क्या किसी व्यक्ति के सन्दर्भ, उसे किसी ख़ास तरह के स्थान से शिक्षा पाने का आधार हो सकते हैं? शायद इनके उत्तर मिले-जुले आएँ लेकिन इनको समझने के लिए हमें कुछ बातों को केन्द्र में रखना होगा जैसे :

1. हर बच्चा सीख सकता है;
2. हर बच्चे की सीखने की अपनी गति व तरीक़ा होता है;
3. कुछ बच्चों की शिक्षा से सर्व शिक्षा की ओर बढ़ना राष्ट्र निर्माण का महत्त्वपूर्ण कारक है; और
4. सार्वजनिक शिक्षा के संस्थान (सरकारी विद्यालय) की अवधारणा समानता, सम्प्रभुता जैसे संविधान की अपेक्षाओं के मूलभूत विचारों के अनुरूप ही बुनी जाती है।

अभी के लिए यदि इन चार बातों पर ही ध्यान दें तो हम पाएँगे कि ऊपर पूछे गए सवालों का

औचित्य समाप्त हो जाता है। परन्तु अभी की शिक्षा व्यवस्था को देखने पर ऐसा प्रतीत नहीं होता। अपने पूर्व के अनुभवों में मैंने बहुत से बच्चों को पढ़ाने का कार्य किया जिसमें शहर के नामचीन स्कूल से लेकर ग्रामीण क्षेत्र के दूरस्थ सरकारी व प्राइवेट विद्यालय भी शामिल हैं। इस आधार पर कुछ स्कूलों के सन्दर्भ भी यहाँ लिखने ज़रूरी जान पड़ते हैं। आज के सन्दर्भों में इन सवालों को समझने में ये सन्दर्भ हमारी मदद ही करेंगे।

स्कूल अ : शहर का जाना माना प्राइवेट स्कूल जहाँ पर प्रवेश दिलवाने के लिए अभिभावकों को नाकों चने चबाने पड़ जाते हैं। और क्यों न हो, स्कूल का नाम जो है। इस विद्यालय में प्रवेश कक्षा 1, 5 और 8 में होता है। प्रवेश हेतु जो प्रक्रिया विद्यालय अपनाता है उसमें लिखित परीक्षा, बच्चे के द्वारा पिछली कक्षा में प्राप्तांक और अभिभावकों के साथ साक्षात्कार के आधार पर प्रवेश दिया जाता है। अभिभावकों का अँग्रेज़ी बोलना और समझना अनिवार्य है। हर वर्ष की परीक्षाओं के बाद कक्षा 5 और 8 के बच्चों की


चित्र : हीरा धुर्वे

छँटनी की जाती है जिसमें बच्चों द्वारा प्राप्तांकों को आधार बनाया जाता है। कक्षा 9 की पढ़ाई दिसम्बर माह में समाप्त हो जाती है और उसके बाद कक्षा 10 का कोर्स अप्रैल माह तक पूरा, बाक़ी के महीनों में केवल एग्ज़ाम होते हैं और सुधार कार्य होता है। बच्चों को बोर्ड पैटर्न पर ख़ूब घिसा जाता है और परिणाम कि सभी बच्चों के 90% से अधिक अंक आते हैं। और इसके साथ ही स्कूल का नाम और फिर प्रवेश प्रक्रिया। इस पूरे प्रकरण में अभिभावकों की जेब तो ढीली होती ही है साथ ही बच्चों में भी दम्भ का भाव बनने लगता है जो उनके व्यक्तित्व व व्यवहार पर कभी-कभी बुरा प्रभाव छोड़ता है।

स्कूल ब : एक सरकारी विद्यालय जहाँ शिक्षकों की संख्या तीन है और बच्चे लगभग 150। ये बच्चे आसपास के सामान्य वर्ग के बच्चे नहीं हैं, बल्कि जीवन से संघर्ष करती परिस्थितियों के मारे हैं। इनमें से अधिकतर काम करते हैं और हर रोज़ रात को अपने माता-पिता के झगड़े को भी बर्दाश्त करते हैं। इस विद्यालय में बच्चों का प्रवेश पूरे साल चलता रहता है और शिक्षकों से यह अपेक्षा रहती है कि सभी बच्चे अपनी आयु के अनुसार कक्षा में पढ़ें। परन्तु तीनों शिक्षक अपनी ज़िम्मेदारी को समझते हुए पूरी तल्लीनता से बच्चों के साथ सीखने-सिखाने में जुटे रहते हैं। उनको सभी बच्चों के माता-पिता के बारे में पता है और उनसे मिलने का समय वे महीने में एक बार तो निकाल ही लेते हैं। माता-पिता का भी कहना रहता है कि देख लो, पढ़ेंगे तो ठीक वरना हमारे साथ काम तो कर ही रहे हैं। शिक्षकों के पूछने पर वे कहते हैं कि हमें भी तो किसी ने पहली बार ही पढ़ाया था, हम कौन-सा पेट से पढ़कर आए थे लेकिन हम यहाँ तक पहुँच ही गए। ये आज की पीढ़ी है हमसे भी आगे निकलेगी। बच्चों को भी स्कूल आना पसन्द है क्योंकि यहाँ उनको छूट है अपनी बात कहने की, अपनी पत्रिका बनाने की, किसी तरह की ज़िम्मेदारी को निभाने की, और एक सवाल को कई सवालों के सन्दर्भों में बुनने की।

विद्यालयों के ऐसे सन्दर्भ देकर कतई प्राइवेट और सरकारी विद्यालयों की तुलना की कोशिश नहीं की जा रही, अपितु इस बात को स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है कि केवल बेहतर सुविधाओं से बेहतर शिक्षा नहीं होती। उसके साथ शिक्षा को उसके संवैधानिक उद्देश्यों से जोड़कर देखना भी ज़रूरी होता है। हम ऊपर रखे गए कुछ सिद्धान्तों में बच्चे की जगह यदि व्यक्ति कर दें तो हर व्यक्ति अलग होता है, उसकी सोच, उसके सीखने की गति व तरीक़ा आदि अलग होते हैं तो फिर बच्चों की शिक्षा में हम इस तथ्य को क्यों भूल जाते हैं और सभी को एक ही तरीक़े से सीखने के लिए विवश करते हैं। किसी का भी किसी सन्दर्भ में पैदा होना यह निर्धारित नहीं कर सकता कि वह आने वाले समय में पढ़ेगा / पढ़ेगी या नहीं, या फिर वह चोर / पुलिस बनेगा / बनेगी। मुद्दा है सही शिक्षा के मौक़े उपलब्ध करवाने का, मुद्दा है सही शैक्षिक लक्ष्यों को पाने का, मुद्दा है सही ग़लत के भाव से निकलकर उचित का चुनाव करने का। आज की तारीख़ में पढ़े-लिखे इज़्ज़तदार चोर भी हैं और बिना पढ़े-लिखे बदनाम नागरिक भी।

इज़्ज़तदार चोरों में कई डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, प्राइवेट स्कूल मालिक आदि आते हैं जो केवल पैसा कमाने के लिए शिक्षा लेते हैं और उस शिक्षा का समाज पर दम्भ झाड़ने के लिए नामचीन, रट्टू विद्या पर आधारित, घमण्ड की शिक्षा देने वाले विद्यालय होते हैं। वहीं दूसरी ओर ऐसे विद्यालय भी हैं जो पहले तो सभी के लिए हुआ करते थे, पर आज उन्हें ख़ास तरह के लोगों के बच्चों के लिए ही देखा जाने लगा है। परन्तु इस तरह की छाप के साथ वे देश को बेहतर नागरिक देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। मानसिकता को बदलने और शिक्षा के सही मायनों को समझने के लिए समाज, शिक्षक और तंत्र को एक होना होगा तभी बेहतर शिक्षा सभी की शिक्षा हो पाएगी।

यशवेन्द्र सिंह रावत ने प्रारम्भिक शिक्षा में शिक्षक के तौर पर दस वर्षों तक कार्य किया। आप शिक्षक-प्रशिक्षण व सामाजिक सरोकार से जुड़े मुद्दों पर पिछले ग्यारह वर्षों से कार्य कर रहे हैं। गणित विषय से सम्बन्धित विभिन्न मान्यताओं, सन्दर्भों और सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं पर कार्य करना आपको रुचिकर लगता है। आप विगत दस वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथ जुड़े हैं।

सम्पर्क : yashvendra@azimpremjifoundation.org